आय सृजन गतिविधि

व्यवसाय योजना

दुग्ध उत्पादन और केंचुआ खाद बनाना

2023-24

स्वयं सहायता समूह का नाम	:	शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह
ग्रामीण वन विकास समिति का नाम	:	कुलाह
फील्ड टेक्निकल यूनिट का नाम	:	स्वारघाट
डीएमयू/वन मंडल का नाम	:	बिलासपुर
एफसीसीयू / सर्कल	:	बिलासपुर
हि प्र व पा त प्र और आ सु प जाईका के द्वारा प्रायोजित		द्वारा तैयार:- डीएमयू बिलासपुर, एफटीयू स्वारघाट और शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह

विषयसूची

विवरण	पेज
परिचय	3-4
कार्यकारी सारांश	4
स्वयं सहायता समूह का विवरण	5-8
गांव का भौगोलिक विवरण	8-9
उत्पादन प्रक्रिया का विवरण	9-10
आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण	10-11
विपणन/बिक्री का विवरण	11
स्वोट अनालिसिस	11
सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण	11-12
अर्थशास्त्र का विवरण	12-14
फंड के स्रोत	14-15
निगरानी विधि	15
व्यापार योजना आय सृजन गतिविधि- केंचुआ खाद बनाना	16
परिचय	16
आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण	16
उत्पादन प्रक्रिया का विवरण	17
विपणन/बिक्री का विवरण	17-18
स्वोट अनालिसिस	18
अर्थशास्त्र का विवरण	19-21
फंड के आवश्यकता	22
फंड के स्रोत	22-23
निगरानी	23
परियोजना की कुल लागत	23-24
अनुलग्नक	25-26

परिचय

हिमाचल प्रदेश एक राजसी पौराणिक भूभाग है जो अपनी सुंदरता शांति समृद्धि संस्कृति और धार्मिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रदेश में पुरातन काल से ही देवी देवताओं की अत्यधिक मान्यता श्रद्धा और उन पर अटूट विश्वास है जिसके कारण इसे देवभूमि के संबोधन से भी पुकारा जाता है। प्रदेश में विविध भोगोलिक स्थितियां है तथा जहां पंजाब प्रांत की सीमा से लगते उना कांगड़ा सोलन और सिरमौर जिले के कुछ मैदानी भूभाग समुद्र तल से 300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है वही चंबा लाहौल स्पीति और किन्नौर जिले के हिमालयी क्षेत्र समुद्र तल से 6816 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसी कारण प्रदेश की जलवायु में भी अत्यधिक विविधता है। हिमाचल प्रदेश में जहां ऊँचे पहाड़ है वही संकरी घटियां भी है प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 55673 वर्ग किलोमीटर है। इसकी आबादी लगभग 7.5 मिलियन है । प्रदेश के हिमालयी भू भाग से कई नदियाँ निकलती है जो निरंतर बहती रहती है।

प्रदेश की लगभग 90% आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहती है तथा अपनी आजीविका के लिए अधिकतर कृषि बागवानी पशुपालन तथा वनों से प्राप्त गैर कास्ट वन उत्पादों पर निर्भर है। प्रदेश में जल विद्युत और पर्यटन उद्योग राजकीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। प्रदेश में कई प्रसिद्ध एवं पुरातन मंदिर है। जहां बाहरी राज्यों के लाखों लोग श्रद्धा और विश्वास के साथ आते हैं तथा प्रदेश को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आमदनी होती है। प्रदेश में कई सुंदर प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है जहां पर बाहरी प्रदेशों से और विदेशी यात्री सकून प्राप्ति के लिए लाखों की संख्या में आते हैं और प्रदेश की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में विशेष भूमिका निभाते है। प्रदेश में फल उत्पादन विशेष कर सेब के बगीचे भी,इसकी आर्थिकी को चार चाँद लगते है इस राज्य की सेब राज्य के रूप में भी विशेष पहचान है। हिमाचल प्रदेश के वन एवं परिस्थितिक तंत्र समृद्ध जैव विविधता के भंडार हैं और नाजुक ढलान वाली भूमि को संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वन चिरकाल से ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका के प्राथमिक स्त्रोत रहे हैं और ग्रामीण लोग अपनी आजीविका सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए वन संसाधनों पर निर्भर है। लेकिन कठोर वास्तविकता यह है कि वनों के अत्यधिक दोहन चारा,ईंधन व् गैर कास्ट वन उत्पादों की अत्यधिक निकासी तथा वन अग्नि की घटनाओं आदि के कारण तथा विकास कार्यों के लिए वन भूमि हस्तांतरण आदि से वनों का निम्नीकरण हुआ है। जिसकी भरपाई की आवश्यकता महसूस की गई है तथा इसके लिए कई वन परियोजनाएं संचालित की जा रही है जिनमें से हिमाचल प्रदेश वन परिस्तिथिकी प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जायका वित् पोषित) भी एक है जिसके एक विशेष घटक आजीविका सुधार के अंतर्गत सात जिलों के कुछ चयनित क्षेत्रों में वन विकास समितियों का गठन करके करके उनमें आजीविका सुधार हेतु स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा रहा है तथा इन समूहों, विशेषकर महिला समूहो को आजीविका से जोड़ा जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश का बिलासपुर जिला स्वतंत्रता से पूर्व कहलूर रियासत के नाम से प्रसिद्ध एक सवायत रियासत थी जो वर्ष 1952-53 में भारतीय संघ में तत्कालीन हिमाचल प्रदेश के छठे जिला के रुप में सम्मिलित हुई थी इसके अंतिम शासक राजा आनंद चंद थे बिलासपुर जिला पूरा बिलासपुर वन मंडल के अंतर्गत आता है। इस वन मंडल में चार वन परिक्षत्रो, घुमारवीं, सदर, झंडूत्ता, व स्वारघाट में 26 वन विकास समितियों का गठन किया जा चुका है और इसके आधीन 56 स्वंय सहायता समूह गठित किए गए हैं जिनको आजीविका वर्धन गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है।

बिलासपुर जिले का सूक्ष्म परिचय देना भी अति आवश्यक है। बिलासपुर जिले का संपूर्ण भोगोलिक क्षेत्रफल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार 1167 वर्ग किलोमीटर है तथा राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार 1155 वर्ग किलोमीटर है। सतलुज नदी जिले के लगभग मध्य से गुजरती है जिस पर भाखड़ा के निर्माण के बाद कृत्रिम झील बनी है जिसे गोविन्द सागर के नाम से जाना जाता है। भाखड़ा बांध तथा इस झील के निर्माण में इस जिले की बहुत सारी उपजाऊ भूमि (लगभग 200 वर्ग किलोमीटर)निर्माण में जल मगन हो गई है और कई गांव को उजाड़ना पड़ा था यहाँ तक कि इस पूर्व रियासत के मुख्यालय और पुरातन शहर को भी उजड़ना पड़ा था जिसे वर्तमान जिला मुख्यालय के तौर पर नए सिरे से बसाया गया है। जिले के पंजाब की सीमा से लगते क्षेत्र सुमद्र तल से 300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है जबकि सोलन जिले से लगती सीमा के कुछ क्षेत्र 1900 मीटर तक की ऊंचाई पर भी स्थित है। जिले के घुमारवी,जुखाला और बरठी के इलाके समतल है तो बाकि के

इलाके मध्यम से अधिकतम ढलान वाले है। जिले की उतरी सीमा हमीरपुर जिले और मंडी जिला के साथ लगती है तथा पूर्व तथा दक्षिण में सोलन तथा पश्चिम में ऊना और पंजाब प्रांत के रूपनगर जिला की सीमाएं लगती है। जिले का अधिकतम भाग सतलुज नदी तथा गोविंद सागर झील का जल ग्रहण क्षेत्र है। गोविंद सागर झील में सीर, सुकर सरयाली,गम्बर, गम्ब्रोला और आली खड्डे समायोजित होती है इस जिले में सात चिर परिचित पर्वत श्रीखलाएं है जिन्हें सात धारों के रूप में जाना जाता है। यह है, :- 1.नैना देवी धार 2. कोट धार 3. झंजिआर धार 4. रतन पुर धार 5. तिउन धार 6. बंदला धार 7.बहादुर पुर धार। जिले में ऊँची चोटियाँ को छोड़ कर जहां सम शितोषण जलवायु होता है, शेष भाग में गर्मियों में अत्यधिक गर्मी और सर्दियों में अत्यधिकसर्दी और कोहरा पड़ता है। जिले में ओसतन 1270 मि० मी० वार्षिक वर्षा रिकॉर्ड की गई है और ओसतन 61 दिन रिकॉर्ड की गई है जिले की अधिकतम कृषि भूमि वर्षा पर निर्भर है केवल कुछ स्थानों पर खड्डो और झील से पानी को पंप द्वारा उठाकर सिंचाई की व्यवस्था की गई है। जिले में मक्की,गंदम, धान की फसल मुख्यता उगाई जाती है तथा कई स्थानों पर दाल,हल्दी सब्जी आदि भी उगाई जाती है। हल्दी जिले का ब्रांड प्रोडक्ट घोषित किया गया है। गोविंद सागर झील में मछली पालन पर भी कई लोगों की आजीविका निर्भर है जिले में कृषि को पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन की भी सपोर्ट है, और लोगो की आजीविका का मुख्य स्रोत है जिले में भाखड़ा बांध, कोल डेम और अपने समय में एशिया का सबसे ऊंचा पुल कन्द्रोर पुल जिले के जाने-माने सिविल अभियांत्रिकी के मशहुर नमूने है।जिले में स्थित नैना देवी मंदिर तथा शहतलाई में बाबा बालक नाथ तपोस्थली प्रसिद्ध धार्मिक पर्यटन स्थल है जहां हर वर्ष लाखों लोग दर्शनार्थ श्रद्धा से आते हैं जिले में स्थित एसीसी सीमेंट फैक्ट्री बरमाना व बागा में स्थित अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्रियों का भी जिले की आर्थिक प्रगति में विशेष योगदान रहा है किरतपुर-मनाली राष्ट्रीय उच्च मार्ग इस जिले से होकर व जिला मुख्यालय बिलासपुर से होकर गुजरता है जिससे ऊपरी क्षेत्रों मनाली लाहौल स्पीति तथा लेह तक की यात्रा करने वाले लाखों की संख्या में पर्यटक आते जाते हैं। जिले में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान व हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना से जिले की आर्थिक और सामाजिक प्रगति की संभावना प्रबल हुई है। फोरलेन राष्ट्रीय राजमार्ग किरतपुर मनाली और निर्माणाधीन रेलवे लाइन के निर्माण कार्य पूर्ण होने पर जिले की स्थिति और भी सुदृढ़ होने की संभावना है।

कार्यकारी सारांश

<u>ग्राम वन विकास समिति कुलाह:-</u>

कुलाह वार्ड, ग्राम पंचायत कुटेहला के अंतर्गत विकास खंड स्वारघाट तहसील श्री नैना देवी जिला बिलासपुर में स्वारघाट से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है जो कि वन परिक्षेत्र स्वारघाट की स्वारघाट बीट के अंतर्गत आता है। इस वार्ड की एक वन ग्राम विकास समिति गठित की गई जिसे हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जायका वित्त पोषित) के अधीन संचालित किया जा रहा है। यह वी० एफ० डी० एस० जिला व मंडल मुख्यालय बिलासपुर से 42 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है

ग्राम वन विकास समिति की महत्वपूर्ण विशेषताएं:-

कुल परिवारों की संख्या = 53 (सामान्य)

बी०पी०ल० परिवारों की संख्या=

कुल जनसंख्या = 200

भूमि प्रयोग:-

कुल क्षेत्रफल=169.9 है०

कृषि भूमि =82.41है०

वन भूमि =66.48 है०

ग्राम वन विकास समिति कुलाह के अंतर्गत आजीविका सुधार गतिविधियों के लिए दो स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया है। जिसमें से एक स्वयं सहायता समूह का नाम शिव शक्ति व दूसरा संतोषी माता है। यहां हम शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह की व्यापार योजना बनाने के बारे में चर्चा कर रहे हैं।

स्वयं सहायता समूह शिव शक्ति का विवरण:-

शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह का गठन अप्रैल 2021में ग्राम वन विकास समिति कुलाह के अंतर्गत कौशल और क्षमताओं को उन्नत करके आजीविका सुधार सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है। यह समूह सीमांत किसान परिवारों की कमजोर आर्थिकी वाले परिवारों की 10 महिलाओं का बनाया गया है। यद्यपि समूह की सभी महिलाये कृषि एवं पशुपालन के कार्य से जुड़ी हुई है लेकिन भूमि जोत छोटे होने के कारण व सिंचाई सुविधा ना होने के कारण उत्पादन का स्तर संतृप्ति के करीब पहुंच गया है। इसलिए अपनी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्होंने आगे बढ़ने का फैसला किया। दुग्ध उत्पादन और केंचुआ खाद बनाने के कार्य को व्यवासिक रूप में करने का निर्णय लिया जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सकती है। । समूह की महिलाएं ₹100 प्रतिमाह की दर से प्रति सदस्य योगदान भी कर रही हैं समूह फोटो निम्न प्रकार:-

सदस्यों का विवरण निम्न प्रकार:-

फोटो के साथ स्वयं सहायता समुह सदस्यों का विवरण

क्र स	नाम	पद	वर्ग	उम्र	शैक्षणिक योग्यता	मोबाइल नंबर
1.	मीना कुमारी w/o सन्त राम	प्रधान	सामान्य	49	8th	97363-48751
2.	लीला देवी w/o गगनलाल	कोषाध्यक्ष	सामान्य	53	6th	97367-23799
3.	सुनीता देवी w/o बीरबल सिंह	सचिव	सामान्य	46	8th	98175-44070
4.	वनीता देवी w/o अनिल कुमार	सदस्य	सामान्य	30	10th	80911-72358
5.	चंचला देवी w/o मस्तानाराम	सदस्य	सामान्य	47	–	97362-14772
6.	गुरमीत देवी w/o प्यारा लाल	सदस्य	सामान्य	39	5th	78762-38943
7.	सावित्री देवी w/o रूपलाल	सदस्य	सामान्य	51	–	78072-39024
8.	शर्मिला देवी w/o शक्ति सिंह	सदस्य	सामान्य	39	5th	98053-32391
9.	चम्पा देवी w/o बन्सी राम	सदस्य	सामान्य	47	5th	96251-30667
10.	रीना देवी w/o नरेन्द्र कुमार	सदस्य	सामान्य	35	10th	75910-00108
11.						
12.						
13.						
14.						
15.						
16.						

फोटो के साथ स्वयं सहायता समूह के सदस्यों का विवरण

मीना कुमारी (प्रधान)

लीला देवी (कोषाध्यक्ष)

सुनीता देवी (सचिव)

वनिता देवी (सदस्य)

चंचला देवी(सदस्य)

गुरमीत देवी(सदस्य)

सावित्री देवी(सदस्य)

उर्मिला देवी(सदस्य)

चंपा देवी(सदस्य)

रीना देवी(सदस्य)

शिवशक्ति स्वयं सहायता समूह कुलाह:-

स्वयं सहायता समूह का नाम	::	शिव शक्ति

स्वयं सहायता समूह का एमआई कोड संख्या	::	-
ग्रामीण वन विकास समिति का नाम	::	कुलाह
फील्ड टेक्निकल यूनिट का नाम	:	स्वारघाट
डीएमयू/ वन मंडल का नाम	::	बिलासपुर
गांव	::	कुलाह
विकास खंड	::	स्वारघाट
ज़िला	::	बिलासपुर
स्वयं सहायता समूह में सदस्यों की कुल संख्या	::	10
गठन की तिथि	::	अप्रैल 2021
बैंक का नाम और विवरण	::	हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक सीमित, स्वारघाट।
बैंक खाता संख्या	::	11810108215
स्वयं सहायता समूह की मासिक बचत	::	रु.1000/-माह
कुल बचत	::	27493/-
कुल अंतरऋण-	::	हां (5000)
नकद ऋण सीमा	::	-
चुकौती स्थिति		किस्तों में

गांव का भौगोलिक विवरण:-

जिला मुख्यालय से दूरी	:	42किमी
मुख्य मार्ग से दूरी	: :	स्वारघाट3कि०मी०, किरतपुर 26 कि०मी०,गम्बर पुल 11 कि०मी० लगभग
स्थानीय बाजार का नाम एवं दूरी	:	श्री नैना देवी जी 28 कि०मी०, स्वारघाट 3 कि०मी०, किरतपुर 26 कि०मी०,गम्बर पुल 11 कि०मी० लगभग
प्रमुख शहरों के नाम जहां उत्पादों को बेचा जायेगा	: :	श्री नैना देवी जी 28 कि०मी०, किरतपुर26 कि०मी०, बिलासपुर 42 कि०मी० लगभग

पिछली और अग्रिम कड़ियों की स्थिति	: :	पिछली कड़ी में प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्र बिलासपुर स्थित बरठीं द्वारा व उद्यान विभाग द्वारा प्रदान किया जायेगा । अग्रिम कड़ी में उत्पाद की विक्री हेतु नालागढ़ व बद्दी में स्थित उद्योगों से अनुबन्ध किया जायेगा ।

उत्पादन प्रक्रिया का विवरण

पनीर बनाने वाले स्वयं सहायता समूह के दस सदस्यों ने शुरू में 100 किलो शुद्ध दूध से कारोबार शुरू करने पर सहमति जताई। 40 लीटर दूध को लगातार हिलाते हुए 50 लीटर क्षमता वाले मोटे दूध के बर्तनों में 80-90^{0}C के तापमान तक गर्म किया जाएगा। जब दूध का तापमान लगभग 90^{0}C हो जाए तो इसमें 0.2% साइट्रिक एसिड(यानी 80 ग्राम साइट्रिक एसिड) मिलाएं और 5-6 मिनट तक हिलाते रहें और आंच बंद कर दें और इसे ठंडा होने दें। उत्पाद को मलमल के कपड़े में डालें और अतिरिक्त पानी को निचोड़ लें और पनीर के ऊपर अतिरिक्त भार डाल कर पनीर को दबाएं और परिणामी सामग्री को ठंडे पानी के अंदर मलमल के कपड़े में रखें। अन्य दो दूध के बर्तनों में शेष 60 लीटर दूध के साथ भी यही प्रक्रिया दोहराई जाएगी।

मानक औसत के अनुसार प्रतिदिन 100 लीटर दूध से लगभग 20 किलो ग्राम पनीर का उत्पादन किया जाएगा, जिसे लक्षित बाजारों के अनुसार उचित रूप से बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए विपणन किया जा सकता है। औसतन यदि पनीर की कीमत रु .250रुपये प्रति किलो, एसएचजी की शुद्ध बिक्री 5000/ - दैनिक होगी और यदि दूध 40 रुपये प्रति किलो की दर से खरीदा जाता है तो 100 किलो दूध की मात्रा पर काम किया जायेगा और 4000 प्रति दिन और इस तरह 1000 रुपये प्रति दिन सकल लाभ होगा।

पनीर बनाने का व्यवसाय शुरू करने की बाजार की संभावना

पनीर एक प्राकृतिक डेयरी आइटम है जो स्वस्थ, पोषक तत्वों से भरपूर और बहुत मांग में है। वर्तमान में मांग बढ़ रही है और निकट भविष्य में मांग अधिक होने की संभावना है। व्यवसाय लाभदायक है और इसके लिए कम पूंजी, सस्ती सामग्री और बुनियादी मशीनरी की आवश्यकता होती है। गुणवत्ता पनीर गुणवत्ता नियंत्रण, के साथ उचित उपकरण और मान की कृतप्रोटोकॉल की मांग करता है।

पनीर बनाने का व्यवसाय शुरू करने के कारण

- प्राकृतिक डेयरी उत्पाद
- भारी मांग
- धंधा पैसा बनाने वाला है
- कम पूंजी की जरूरत
- सस्ते घटक
- एसएचजी सदस्य व्यक्तिगत स्तर पर गतिविधि से परिचित हैं

घर में बने पनीर के लिए उपकरण की आवश्यकता

घर में बने पनीर का उत्पादन शुरू करने के लिए शुरू में निम्नलिखित उपकरण खरीदे जाएंगे

1. बॉयलरवेसल 100lt क्षमता
2. मिश्रण आदि को हिलाने के लिए डंडियां
3. कनेक्शन के साथ वाणिज्यिक गैस सिलेंडर
4. गैसभट्टी (चुल्ला)
5. डिजिटल वजनी मशीन
6. मापने वाला उपकरण (1lt, 2lt, 5lt)
7. रेफ्रिजरेटर (200 लीटर)
8. रसोई के उपकरण और अन्य विविध लेख
9. पॉलीसी लिंग टेबल टॉप
10. हीट सीलर
11. एप्रन, टोपी, प्लास्टिक के हाथ के दस्ताने आदि।
12. कुर्सियां, मेज आदि।
13. पनीर दबाने की मशीन

आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण

1	उत्पाद का नाम	::	पनीर बनाना
2	उत्पाद पहचान की विधि	::	यह उत्पाद पहले से ही कुछ SHG सदस्यों द्वारा बनाया जा रहा है
3	एसएचजी/सीआईजी/क्लस्टर सदस्यों की सहमति	::	हाँ

उत्पादन योजना का विवरण

1	उत्पादन चक्र(दिनोंमें)	::	1दिन
2	प्रति चक्र आवश्यक जनशक्ति) सं।(	::	सभी सदस्य
3	कच्चे माल का स्रोत	::	स्थानीय रूप से उपलब्ध
4	अन्य संसाधनों का स्रोत	::	बिलासपुर 42 कि.मी
5	प्रति चक्र आवश्यक मात्रा) किलो(	::	10 0लीटर दूध) शुरुआत में(
6	प्रति चक्र अपेक्षित उत्पादन) किग्रा(	::	20 किलो) शुरुआत में(

कच्चे माल की आवश्यकता और अपेक्षित उत्पादन

क्रमांक	कच्चा माल	इकाई	समय	मात्रा	राशि प्रति किलो) रुपये(	कुल रकम	अपेक्षितपनीरउत्पादन) किग्रा(	रु . प्रति किलो	कुल रकम
1	गाय का दूध	किलो ग्राम	हर दिन	10 0 लीटर	40/-	4000	20	250	5000

विपणन/ बिक्री का विवरण

1	संभावित बाजार स्थान	::	श्री नैना देवी जी 28कि०मी०, स्वारघाट 3 कि०मी०,

2	इकाई से दूरी	::	किरतपुर 26 कि०मी०,गम्बर पुल 11 कि०मी० लगभग.
3	बाजार में उत्पाद की मांग / एस	::	दैनिक मांग
4	बाजार की पहचान की प्रक्रिया	::	समूह के सदस्य अपनी उत्पादन क्षमता और बाजार में मांग के अनुसार खुदरा विक्रेता /थोक विक्रेता का चयन /सूचीबद्ध करेंगे।प्रारंभ में उत्पाद निकट बाजारों में बेचा जाएगा।
5	उत्पाद की मार्केटिंग रणनीति		एसएचजी सदस्य अपने उत्पाद को सीधे गांव की दुकानों और निर्माण स्थल /दुकान से बेचेंगे। इसके अलावा खुदरा विक्रेता द्वारा ,निकट बाजारों के थोक व्यापारी। प्रारंभ में उत्पाद को 1किलोग्राम पैकेजिंग में बेचा जाएगा।
6	उत्पाद ब्रांडिंग		सीआईजी/एसएचजी स्तर पर सीआईजी/एसएचजी की ब्रांडिंग करके उत्पाद का विपणन किया जाएगा ।बाद में इस IGAको क्लस्टर स्तर पर ब्रांडिंग की आवश्यकता हो सकती है
7	उत्पाद" नारा"		"पवित्रता और सर्वोच्चता का एक उत्पाद"

स्वोट अनालिसिस

- ताकत -
  - गतिविधि पहले से ही कुछ एसएचजी सदस्यों द्वारा की जा रही है
  - कच्चा माल आसानी से उपलब्ध
  - निर्माण प्रक्रिया सरल है
  - उचित पैकिंग और परिवहन में आसान
  - उत्पाद शेल्फ जीवन लंबा है
- कमज़ोरी -
  - विनिर्माण प्रक्रिया/ उत्पाद पर तापमान, आर्द्रता, नमी का प्रभाव।
- अवसर -
  - बाजारों का स्थान
  - सभी मौसमों में सभी खरीदारों द्वारा दैनिक/ साप्ताहिक खपत और उपभोग
- खतरे / जोखिम -
  - विशेष रूप से सर्दी और बरसात के मौसम में निर्माण और पैकेजिंग के समय तापमान, नमी का प्रभाव।
  - कच्चे माल के दामों में अचानक हुई बढ़ोतरी
  - प्रतिस्पर्धी बाजार

सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण

आपसी सहमति से एसएचजी समूह के सदस्य कार्य को अंजाम देने के लिए अपनी भूमिका और जिम्मेदारियां तय करेंगे। सदस्यों के बीच उनकी मानसिक और शारीरिक क्षमता के अनुसार काम का बंटवारा किया जाएगा।

- समूह के कुछ सदस्य पूर्व-उत्पादन प्रक्रिया (अर्थात कच्चे माल की खरीद आदि) में शामिल होंगे।
- कुछ समूह सदस्य उत्पादन प्रक्रिया में शामिल होंगे।
- समूह के कुछ सदस्य पैकेजिंग और मार्केटिंग में शामिल होंगे।

अर्थशास्त्र का विवरण

व्यवसाय शुरू करने के लिए अंतिम बल्कि सबसे महत्वपूर्ण कदम व्यवसाय चलाने के लिए लागत निर्धारित करने के लिए एक वित्तीय योजना बनाना है और इसमें व्यावसायिक लाभ भी शामिल होना चाहिए शुरू में एसएचजी संक्षेप में कमाई करने जा रहा है एक लागत लाभ विश्लेषण का अनुमान लगाया जाना आवश्यक है

ए।	पूंजी लागत			
क्रमांक _	विवरण	मात्रा	यूनिट मूल्य	कुल राशि (रु .)
1	बॉयलर पॉट 100lt क्षमता	3	5000	15,000
2	मिश्रण आदि को हिलाने के लिए शीशे की डंडियां	3	300	900
3	कनेक्शन के साथ वाणिज्यिक गैस सिलेंडर	2	4000	8000
4	गैस भट्टी (चुल्ला)	3	1500	4500
5	डिजिटल वजनी मशीन	1	10,000	10000
6	रेफ्रिजरेटर (200 लीटर)	1	22000	22000
7	रसोई के उपकरण और अन्य विविध लेख (1lt, 2lt, 5lt)	L/S	L/S	4000
8	पॉलीसीलिंग टेबल टॉप हीट सीलर	1	2000	2000
9	एप्रन, टोपी, प्लास्टिक के हाथ के दस्ताने आदि।		L/S	6000
10	कुर्सियां, मेज आदि।		L/S	5000
11	पनीर प्रेसिंग मशीन		L/S	1000

बी।	आवर्ती लागत			
क्रमांक।	विवरण	मात्रा	कीमत	कुल राशि (रु.)
1	कच्चा दूध	3600	25	90000
2	साइट्रिक एसिड	6 लीटर	150/ लीटर	900
3	कमरे का किराया	प्रति महीने	1500	1500
4	पैकेजिंग सामग्री	महीने के	3000	3000
5	परिवहन	महीने के	रुपये प्रति दिन	3000
6	गैस	प्रति माह एक सिलेंडर	2000/सिलेंडर	2000
7	साबुन और डिटर्जेंट/विम स्क्रबर, झाड़ू, वाइपर, आदि।	महीने के महीने हिसाब से	L/S	1000
8	मलमल का कपड़ा	महीने के हिसाब से	L/S	1500
9	श्रम	-	-	16000
10	विविध व्यय (अर्थात स्थिर, बिजली बिल, पानी का बिल, आदि)	महीने के	1000	1000
	कुल आवर्ती लागत (बी)			**119900**

	कुल पूंजीगत लागत (ए)			**78400**

सी।	उत्पादन की लागत (मासिक)				
क्रमांक _	विवरण			राशि (रु.)	
1	कुल आवर्ती लागत			119900	
2	पूंजीगत लागत पर सालाना 10% मूल्यह्रास			653	
	उत्पादन की कुल लागत			**120553**	
डी।	**कुल आय मासिक**				
क्रमांक _	**विवरण**	**रोज**	**अपेक्षित दर प्रति किग्रा**	**कुल बिक्री दैनिक**	**मासिक बिक्री**
1	पनीर का कुल उत्पादन	20कि लोग्राम	250/किग्रा	5000	150000

लागत लाभ का विश्लेषण

क्रमांक _	विवरण	राशि (रु.)
1	पूंजीगत लागत पर 10% मूल्यह्रास	653
2	प्रति माह कुल आवर्ती लागत	**119900**
3	कुल खर्च	**120553**
4	कुल उत्पादन (मासिक)	600किग्रा
5	अपेक्षित दर प्रति किग्रा	250/किग्रा
6	कुल बिक्री राशि	150000
	शुद्ध आय (मासिक)= 150000-120553	29447
7	लाभ साझेदारी	लाभ के बंटवारे पर सदस्यों के बीच सामूहिक सहमति होगी; हालांकि लाभ का एक हिस्सा भविष्य की आकस्मिकता के लिए आरक्षित रखा जाएगा।

नोट: श्रम की मात्रा (16000) जिसे आवर्ती लागत में जोड़ा गया है, व्यावहारिक रूप से एसएचजी के सदस्यों की आय है क्योंकि श्रम इनपुट एसएचजी के सदस्यों के भीतर होगा।

फंड फ्लो

क्रमांक _	विवरण	कुल राशि(रु.)	परियोजना का समर्थन	एसएचजी योगदान
1	कुल पूंजी लागत	78400	58800 (75%)	19600(25%)
2	कुल आवर्ती लागत	119900	-	119900
4.	प्रशिक्षण/ क्षमता निर्माण/ कौशल उन्नयन	50000	50000	-
	कुल	**248300**	**108800**	**139500**

टिप्पणी-

- एसएचजी में सभी सदस्य होते हैं और परियोजना द्वारा 75% पूंजीगत लागत का योगदान दिया जाएगा।
- आवर्ती लागत एसएचजी/सीआईजी सदस्यों द्वारा वहन की जाएगी।
- प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन व्यय परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा।

फंड के स्रोत

परियोजना का समर्थन	• पूंजीगत लागत का 75% उपकरणों सहित मशीनरी की खरीद के लिए उपयोग किया जाएगा ,जैसा कि क्रम संख्या 8में वर्णित है। • तक **1**लाख रुपये **SHG**बैंक खाते में रखे जाएंगे। • प्रशिक्षण /क्षमता निर्माण /कौशल उन्नयन लागत।	कोडल औपचारिकताओं का पालन करने के बाद संबंधित डीएमयू/एफसीसीयू द्वारा मशीनरी /उपकरणों की खरीद की जाएगी ।
एसएचजी योगदान	• पूंजीगत लागत का **%50** स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन किया जाएगा , इसमें मशीनरी के अलावा अन्य सामग्री / उपकरणों की लागत शामिल है। • एसएचजी द्वारा वहन की जाने वाली आवर्ती लागत	

प्रशिक्षण/ क्षमता निर्माण/ कौशल उन्नयन

प्रशिक्षण/ क्षमता निर्माण/ कौशल उन्नयन लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी।

निम्नलिखित कुछ प्रशिक्षण/ क्षमता निर्माण/ कौशल उन्नयन प्रस्तावित/ आवश्यक हैं:

- कच्चे माल की लागत प्रभावी खरीद
- गुणवत्ता नियंत्रण
- पैकेजिंग और मार्केटिंग
- वित्तीय प्रबंधन

बैंक ऋण चुकौती -

यदि ऋण बैंक से लिया गया है तो यह नकद ऋण सीमा के रूप में होगा और सीसीएल के लिए पुनर्भुगतान अनुसूची नहीं है; हालांकि, सदस्यों से मासिक बचत और चुकौती रसीद सीसीएल के माध्यम से भेजी जानी चाहिए।

- सीसीएल में, एसएचजी के बकाया मूलधन का बैंकों को साल में एक बार पूरा भुगतान किया जाना चाहिए। ब्याज राशि का भुगतान मासिक आधार पर किया जाना चाहिए।
- सावधि ऋणों में, चुकौती बैंकों में चुकौती अनुसूची के अनुसार की जानी चाहिए।

निगरानी विधि -

लाभार्थियों का बेसलाइन सर्वेक्षण और वार्षिक सर्वेक्षण किया जाएगा।

निगरानी के लिए कुछ प्रमुख संकेतक इस प्रकार हैं:

- समूह का आकार
- निधि प्रबंधन
- निवेश
- आय उपार्जन
- उत्पादन स्तर
- उत्पाद की गुणवत्ता
- बेचा गया सामान
- बाजार पहुंच

टिप्पणियां: समूह की आगामी दृष्टि अन्य डेयरी वस्तुओं आदि के रूप में मूल्यवर्धन द्वारा उनकी आय में वृद्धि करना है।

व्यापार योजना
आय सृजन गतिविधि- केंचुआ खाद बनाना
द्वारा
शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह

परिचय

सरल उत्पादन तकनीकों, पारिस्थितिक, आर्थिक और इससे जुड़े मानव स्वास्थ्य लाभों के कारण केंचुआ खाद बनाना देश में एक मजबूत मुकाम हासिल कर रहा है। विशेष रूप से देश के दक्षिणी और मध्य भागों में गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के तकनीकी मार्गदर्शन के तहत, उद्यमियों द्वारा सरकार के समर्थन के तहत, वर्मीकम्पोस्टिंग इकाइयों की एक महत्वपूर्ण संख्या स्थापित की गई है।

वर्मीकम्पोस्टिंग के प्रत्यक्ष पर्यावरणीय और आर्थिक लाभ हैं क्योंकि यह स्थायी कृषि उत्पादन और किसानों की आय में महत्वपूर्ण योगदान देता है। कई गैर सरकारी संगठन, समुदाय आधारित संगठन (सीबीओ), स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), ट्रस्ट आदि हैं जो अपने स्थापित आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों के कारण वर्मीकंपोस्टिंग प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए ठोस प्रयास कर रहे हैं।

कृमि खाद

केंचुओं को पालने/उपयोग करके कम्पोस्ट का उत्पादन वर्मीकम्पोस्टिंग तकनीक कहलाता है। इस तकनीक के तहत, केंचुए बायो मास खाते हैं और इसे पचे हुए रूप में उत्सर्जित करते हैं जिसे वर्मीकम्पोस्टिंग या वर्मीकम्पोस्ट के रूप में जाना जाता है। यह छोटे और बड़े पैमाने के किसानों दोनों के लिए खाद के उत्पादन के लिए सबसे सरल और लागत प्रभावी तरीकों में से एक है। वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन इकाई किसी भी ऐसी भूमि में स्थापित की जा सकती है जो किसी भी आर्थिक उपयोग के अधीन नहीं है बल्कि छायादार और पानी के ठहराव से मुक्त है। स्थान भी जल संसाधन के निकट होना चाहिए

वर्मीकम्पोस्टिंग, जिसे सही मायने में "कचरा रूपी सोना" कहा जाता है, जैविक कृषि उत्पादन में प्रमुख इनपुट है। सरल तकनीक के कारण, कई किसान वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन में लगे हुए हैं क्योंकि यह मिट्टी के स्वास्थ्य को मजबूत करता है, मिट्टी की उत्पादकता खेती की लागत को कम करती है। पोषक तत्वों की उच्च मात्रा के कारण वर्मीकम्पोस्ट की मांग में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है।

आय सृजन गतिविधि से संबंधित उत्पाद का विवरण

उत्पाद का नाम	::	केंचुआ खाद
उत्पाद पहचान की विधि	::	यह गतिविधि पहले से ही कुछ एसएचजी सदस्यों द्वारा की जा रही है और समूह के सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से तय किया गया है
एसएचजी/सीआईजी/क्लस्टर सदस्यों की सहमति	::	हाँ

उत्पादन प्रक्रियाओं का विवरण

चरण		विवरण
चरण -1	::	प्रसंस्करण जिसमें घास फूस का 1 संग्रह, और जैविक कचरे का भंडारण शामिल है।
चरण-2	::	जैविक कचरे का बीस दिनों के लिए पशुओं के गोबर के घोल के साथ सामग्री को ढेर करके पूर्व पाचन। यह प्रक्रिया आंशिक रूप से सामग्री को पचाती है और केंचुआ खपत के लिए उपयुक्त है। मवेशियों के गोबर और बायोगैस के घोल को सुखाने के बाद इस्तेमाल किया जा सकता है। गीले गोबर का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन के लिए नहीं करना चाहिए।
चरण-3	::	केंचुआ क्यारी तैयार करना। वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने के लिए कचरे को डालने के लिए एक ठोस आधार की आवश्यकता होती है। ढीली मिट्टी कीड़े को मिट्टी में जाने देगी और पानी देते समय, सभी घुलनशील पोषक तत्व पानी के साथ मिट्टी में चले जाते हैं।
चरण-4	::	वर्मी-कम्पोस्ट संग्रह के बाद केंचुओं का संग्रह। पूरी तरह से कंपोस्ट की गई सामग्री को अलग करने के लिए कंपोस्ट की गई सामग्री को छान लें। आंशिक रूप से कम्पोस्ट की गई सामग्री को फिर से वर्मीकम्पोस्ट बेड में डाल दिया जाएगा।
चरण-5	::	नमी बनाए रखने और लाभकारी सूक्ष्मजीवों को बढ़ने देने के लिए वर्मी-कम्पोस्ट को उचित स्थान पर संग्रहित करना।
चरण-6		10X4X2 fit का ईंटों का पका गड्ढा बनाया जाएगा और उसे पानी से बचाने के लिए छप्पर का प्रावधान होगा

उत्पादन योजना का विवरण

उत्पादन चक्र) दिनों में(	::	90दिन) वर्ष में तीन चक्र(
प्रति चक्र आवश्यक जनशक्ति) सं।(	::	1
कच्चे माल का स्रोत	::	घर और अपने खेतों से
अन्य संसाधनों का स्रोत	::	मुक्त बाज़ार
कच्चा माल - आवश्यक मात्रा प्रति चक्र) किलो (प्रति सदस्य	::	1800किलो प्रति चक्र
प्रति सदस्य प्रति चक्र) किलो (अपेक्षित उत्पादन	::	900किलोग्राम प्रति चक्र

विपणन/बिक्री का विवरण

संभावित बाजार स्थान	::	हिमाचल प्रदेश वन विभाग स्थानिय बाज़ार अपने खेत पर प्रयोग करने के लिए
इकाई से दूरी	::	
बाजार में उत्पाद की मांग / एस	::	HOFF (वन विभाग) उनकी नर्सरी के लिए प्रचुर मात्र में वर्मी- कम्पोस्ट खरीद रहा है
बाजार की पहचान की प्रक्रिया	::	पीएमयू हिमाचल प्रदेश वन विभाग द्वारा स्वयं सहायता समूह द्वारा उत्पादित वर्मी- कम्पोस्ट की

		खरीद की सुविधा प्रदान करेगा।
उत्पाद की मार्केटिंग रणनीति		एसएचजी सदस्य भविष्य में बेहतर बिक्री मूल्य के लिए अपने गांवों के आसपास अतिरिक्त विपणन विकल्प तलाशेंगे।
उत्पाद ब्रांडिंग		सीआईजी/एसएचजी स्तर पर उत्पाद का विपणन संबंधित सीआईजी/एसएचजी की ब्रांडिंग द्वारा किया जाएगा। बाद में इस IGA को क्लस्टर स्तर पर ब्रांडिंग की आवश्यकता हो सकती है
उत्पाद" नारा"		"प्रकृति के अनुकूल"

स्वोट अनालिसिस

- ❖ **ताकत**
- गतिविधि पहले से ही कुछ एसएचजी सदस्यों द्वारा की जा रही है
- एसएचजी के प्रत्येक सदस्य के पास प्रत्येक घर में 2 से 8 तक के मवेशी हैं
- एसएचजी सदस्यों के परिवार उच्च मूल्य वाली फसलों और सब्जियों की खेती कर रहे हैं जो पूरे वर्ष कच्चे माल यानी कृषि जैविक कचरे की पर्याप्त उपलब्धता प्रदान करते हैं।
- उनके खेतों में आसानी से उपलब्ध कच्चा माल
- निर्माण प्रक्रिया सरल है
- उचित पैकिंग और परिवहन में आसान
- परिवार के अन्य सदस्य भी लाभार्थियों का सहयोग करेंगे
- उत्पाद आत्म-जीवन लंबाहै
- ❖ **कमज़ोरी**
- विनिर्माण प्रक्रिया/उत्पाद पर तापमान, आर्द्रता, नमी का प्रभाव।
- तकनीकी जानकारी का अभाव
- ❖ **अवसर**
- जैविक एवं प्राकृतिक खेती के प्रति किसानों में जागरूकता के कारण वर्मीकम्पोस्ट की बढ़ती मांग
- वर्मी -कम्पोस्ट का अपने खेत में प्रयोग करने से मृदा स्वास्थ्य में सुधार और वृद्धि तथा गुणवत्तापूर्ण कृषि उत्पाद का उत्पादन होगा जो बेहतर मूल्य प्रदान करेगा।
- रसोई घर से बाहर रह गए घरेलू कचरे सहित जैविक कचरे का सर्वोत्तम उपयोग
- एच पी फॉरेस्ट के साथ मार्केटिंग गठजोड़ की संभावना
- ❖ **धमकी/जोखिम**
- अत्यधिक मौसम के कारण उत्पादन चक्र के टूटने की संभावना
- प्रतिस्पर्धी बाजार
- प्रशिक्षण/क्षमतानिर्माण और कौशल उन्नयन में भागीदारी के प्रति लाभार्थियों के बीच प्रतिबद्धता का स्तर

सदस्यों के बीच प्रबंधन का विवरण

- उत्पादन - कच्चे माल की खरीद सहित व्यक्तिगत सदस्यों द्वारा इसका ध्यान रखा जाएगा
- गुणवत्ता आश्वासन - सामूहिक रूप से
- सफाई और पैकेजिंग - सामूहिक रूप से
- मार्केटिंग - सामूहिक रूप से
- इकाई की निगरानी - सामूहिक रूप से

अर्थशास्त्र का विवरण

क्र.सं	विवरण	इकाइयों	मात्रा/संख्या	लागत (रु.)	वर्ष 1	वर्ष 2	वर्ष 3	वर्ष 4	वर्ष 5
एक।	**पूंजी लागत**								
ए.1	**पिट एवं शेड का निर्माण**								
1	गड्ढे निर्माण के साथ-साथ श्रम लागत (आंतरिक गड्ढे का आकार 10ftX4ftX2ft होगा)	प्रति सदस्य	10	6000	60000	0	0	0	0
2	कवर शेड का निर्माण	प्रति सदस्य	10	4000	40000				
	उप-योग (ए.1)				**100000**	**0**	**0**	**0**	**0**
.2	**यंत्रावली और उपकरण**								
3	औज़ार, उपकरण, तराजू आदि।	प्रति सदस्य	10	2000	20000	0	0	0	0
	उप-योग (ए.2)				**20000**	**0**	**0**	**0**	**0**
	कुल पूंजीगत लागत (ए.1+ए.2)				**120000**	**0**	**0**	**0**	**0**
बी	**आवर्ती लागत**								
4	बीज केंचुआ	प्रति किग्रा	10	500	5000	0	0	0	0

5	घोल/गोबर/अपशिष्ट की खरीद की लागत	टन	48	900	43200	45360	47628	50009	52510
6	श्रम लागत	प्रति टन	24	700	16800	17640	18522	19448	20421
7	पैकिंग सामग्री	नहीं।	4000	2	8000	8400	8820	9261	9724
8	अन्य हैंडलिंग शुल्क	प्रति टन	48	150	7200	7560	7938	8335	8752
सी	**अन्य शुल्क**								
9	बीमा	एल/एस			0	0	0	0	0
10	ऋण पर ब्याज	प्रतिवर्ष		2 प्रतिशत					
	कुल आवर्ती लागत				**80200**	**78960**	**82908**	**87053**	**91406**
	कुल लागत = पूंजीगत और आवर्ती				**200200**	**78960**	**82908**	**87053**	**91406**
डी	**वर्मीकम्पोस्टिंग से आय**								
11	**वर्मीकम्पोस्ट की बिक्री**	टन	48	**6000**	**288000**	**302400**	**317520**	**333396**	**350066**
12	**केंचुए की बिक्री**					**4000**	**8000**	**8000**	**8000**
13	**कुल मुनाफा**				**288000**	**306400**	**325520**	**341396**	**358066**
14	शुद्ध रिटर्न (सीबी)				207800	227440	242612	254343	266660

नोट – चूंकि श्रम कार्य स्वयं सहायता समूह के सदस्यों द्वारा किया जाएगा और उनके स्थान पर पहले से उपलब्ध घोल / गोबर / अपशिष्ट और ये सामग्री उनके द्वारा प्राप्त नहीं की जाएगी , इसलिए, आवर्ती लागत (श्रम लागत, घोल / गोबर / अपशिष्ट की खरीद की लागत)) की कुल आवर्ती लागत से कटौती की जा सकती है।

आर्थिक विश्लेषण

क्रमांक	**विवरण**	**वर्ष 1**	**वर्ष 2**	**वर्ष 3**	**वर्ष 4**	**वर्ष 5**
1	पूंजी लागत	**120000**	**0**	**0**	**0**	**0**
2	आवर्ती लागत	**80200**	**78960**	**82908**	**87053**	**91406**
3	कुल लागत	**200200**	**78960**	**82908**	**87053**	**91406**

4	कुल लाभ	**288000**	**306400**	**325520**	**341396**	**358066**
5	**शुद्ध लाभ**	207800	227440	242612	254343	266660

शुद्ध लाभ का वितरण - उत्पादन में हिस्सेदारी के अनुसार

आर्थिक विश्लेषण के निष्कर्ष

- प्रत्येक सदस्य के लिए गड्ढे का आकार 10X4X2 फीट की योजना बनाई गई है।
- वर्मी कम्पोस्ट की उत्पादन लागत रु. 3.2 प्रति किग्रा
- वर्मी -कम्पोस्ट (रूढ़िवादी पक्ष) की बिक्री रु. 6 प्रति किलो
- रुपये का शुद्ध लाभ होगा। 2.7 प्रति किग्रा
- यह प्रस्तावित है कि प्रत्येक सदस्य प्रति वर्ष 2.7 टन वर्मी -कम्पोस्ट का उत्पादन करेगा जिसके परिणामस्वरूप 27 टन का उत्पादन होगा एक वर्ष में स्वयं सहायता समूह के सभी 10 सदस्यों द्वारा वर्मी -कम्पोस्ट।
- केंचुआ की कीमत रुपये रखी गई है। 500.00 प्रति किग्रा
- दूसरे दूसरे वर्षों के दौरान , बिक्री के लिए अतिरिक्त मिट्टी का काम होगा (क्योंकि यह वर्मी -कम्पोस्ट के उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान कई गुना बढ़ जाएगा)
- वर्मी - खाद बनाना एक लाभदायक IGA है और इसे SHG सदस्यों द्वारा लिया जा सकता है।

फंड की आवश्यकता:

क्रमांक	विवरण	कुल राशि (रु.)	परियोजना का समर्थन	एसएचजी योगदान
1	कुल पूंजी लागत	120000	90000	30000
2	कुल आवर्ती लागत	80200	0	80200
3	प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन	50000	50000	0
	कुल =	**250200**	**140000**	**110200**

टिप्पणी-

- **पूंजीगत लागत - पूंजीगत लागत** का 75% परियोजना के तहत कवर किया जाएगा
- **आवर्ती लागत** - एसएचजी/सीआईजी द्वारा वहन किया जाना।
- **प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन** - परियोजना द्वारा वहन किया जाएगा

फंड के स्रोत:

परियोजना का समर्थन;	• पूंजीगत लागत का 75% पिट और शेड के निर्माण के लिए उपयोग किया जाएगा (आकार 10ftX4ftX2ft होगा) • SHG बैंक खाते में 1 लाख रुपये तक जमा किए जाएंगे। • प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत। • डीएमयू द्वारा 5% ब्याज दर की सब्सिडी सीधे बैंक/वित्तीय संस्थान में जमा की जाएगी और यह सुविधा केवल तीन साल के लिए होगी। एसएचजी को मूल	खरीद संबंधित डीएमयू/एफसीसीयू द्वारा सभी औपचारिक औपचारिकताओं का पालन करने के बाद की जाएगी।

	राशि की किश्तों का भुगतान नियमित आधार पर करना होता है।	
एसएचजी योगदान	• पूंजीगत लागत का 25% स्वयं सहायता समूह द्वारा वहन किया जाएगा। • एसएचजी द्वारा वहन की जाने वाली आवर्ती लागत	

बैंक ऋण चुकौती

यदि ऋण बैंक से लिया गया है तो यह नकद ऋण सीमा के रूप में होगा और सीसीएल के लिए पुनर्भुगतान अनुसूची नहीं है; हालांकि, सदस्यों से मासिक बचत और चुकौती रसीद सीसीएल के माध्यम से भेजी जानी चाहिए।

- सीसीएल में, एसएचजी के बकाया मूलधन का बैंकों को साल में एक बार पूरा भुगतान किया जाना चाहिए। ब्याज राशि का भुगतान मासिक आधार पर किया जाना चाहिए।
- सावधि ऋणों में, चुकौती बैंकों में चुकौती अनुसूची के अनुसार की जानी चाहिए।
- परियोजना सहायता - डीएमयू द्वारा 5% ब्याज दर की सब्सिडी सीधे बैंक/वित्तीय संस्थान में जमा की जाएगी और यह सुविधा केवल तीन साल के लिए होगी। SHG/CIG को नियमित आधार पर मूलधन की किश्तों का भुगतान करना होगा

प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन

प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन लागत परियोजना द्वारा वहन की जाएगी।

निम्नलिखित कुछ प्रशिक्षण/क्षमता निर्माण/कौशल उन्नयन प्रस्तावित/आवश्यक हैं:

- परियोजना अभिविन्यास समूह का गठन/पुनर्गठन
- समूह अवधारणा और प्रबंधन
- आईजीए (सामान्य) का परिचय
- विपणन और व्यवसाय योजना विकास
- बैंक क्रेडिट लिंकेज और उद्यम विकास
- एसएचजी/सीआईजी का एक्सपोजर दौरा - राज्य के भीतर और राज्य के बाहर

निगरानी तंत्र

- वीएफडीएस की सामाजिक लेखा परीक्षा समिति आईजीए की प्रगति और प्रदर्शन की निगरानी करेगी और प्रक्षेपण के अनुसार इकाई के संचालन को सुनिश्चित करने के लिए यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देगी।
- एसएचजी को प्रत्येक सदस्य के आईजीए की प्रगति और प्रदर्शन की समीक्षा करनी चाहिए और प्रक्षेपण के अनुसार इकाई के संचालन को सुनिश्चित करने के लिए यदि आवश्यक हो तो सुधारात्मक कार्रवाई का सुझाव देना चाहिए।

परियोजना की कुल लागत है

पूंजीगत लागत = 78400/-

आवर्ती लागत = 119900/-

दुग्ध उत्पादन के लिए कुल =198300/-

केंचुआ खाद बनाना परियोजना की लागत है

पूंजीगत लागत = 120000/-

आवर्ती लागत = 80200/-

केंचुआ खाद बनाना परियोजना के लिए कुल = 200200/-

व्यवसाय योजना का कुल योग रु. केवल 398500/-

क्रम संख्या	**व्यवसाय योजना**	**पूंजीगत लागत**	**आवर्ती लागत**	**परियोजना का हिस्सा(75% पूंजीगत लागत)**	**लाभार्थी अंशदान(25%पूंजीगत लागत +आवर्ती लागत)**	**कुल लागत**
1.	दुग्ध उत्पादन	78400/-	119900	58800/-	139500/-	198300/-
2.	केंचुआ खाद बनाना	120000/-	80200/-	90000/-	110200/-	200200/-
	कुल	**198400/-**	**200100/-**	**148800/-**	**249700/-**	**398500/-**

अनुलग्नक

हम सब समूह सदस्य ने आईजीए गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सहमति दी
एचपी पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका में सुधार और बीएफडीएस के साथ समन्वय के लिए
आईसीए परियोजना के दिशानिर्देश के अनुसार समूह (केंचुआ खाद बनाना व दुग्ध उत्पादन) द्वारा चुना गया।
सदस्यों का विवरण इस प्रकार है

क्र स	नाम	पद	वर्ग	उम्र	हस्ताक्षर
1.	मीना कुमारी w/o सन्त राम	प्रधान	सामान्य	49	मीना कुमारी
2.	लीला देवी w/o रोशन लाल	कोषाध्यक्ष	सामान्य	53	लीला देवी
3.	सुनीता देवी w/o बीरबल सिंह	सचिव	सामान्य	46	सुनीता देवी
4.	बनीता देवी w/o अनिल कुमार	सदस्य	सामान्य	36	बनीता देवी
5.	चंचला देवी w/o मस्ताना राम	सदस्य	सामान्य	47	चंचला देवी
6.	गुरमीत देवी w/o प्यारा लाल	सदस्य	सामान्य	39	गुरमीत देवी
7.	सावित्री देवी w/o रूप लाल	सदस्य	सामान्य	51	[illegible]
8.	उर्मिला देवी w/o शक्ति सिंह	सदस्य	सामान्य	39	उर्मिला देवी
9.	चम्पा देवी w/o बन्सी राम	सदस्य	सामान्य	47	चम्पा देवी
10.	रीना देवी w/o नरेन्द्र कुमार	सदस्य	सामान्य	35	रीना देवी
11.					
12.					
13.					
14.					
15.					
16.					

हस्ताक्षर
सचिव सुनीता देवी
शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह
गांव कुलाह, तह. नैना देवी जी
जिला बिलासपुर (हि0प्र0)

हस्ताक्षर
प्रधान वीना कुमारी
शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह
गांव कुलाह, तह. नैना देवी जी
जिला बिलासपुर (हि0प्र0)

हस्ताक्षर
सचिव ,वन ग्रामीण विकास
समिति

हस्ताक्षर
प्रधान ,वन ग्रामीण विकास
समिति

हस्ताक्षर
वन रक्षक

हस्ताक्षर
वन खण्ड अधिकारी

हस्ताक्षर
वन परिक्षेत्र अधिकारी

nge Forest Officer
varghat Forest Range
laspur Forest Division

डीएमयू द्वारा स्वीकृत